पाठ 1 **दिसम्बर 29–जनवरी 4**

पतमुस से सुसमाचार

सब्त अपराह्न **दिसम्बर 29**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : प्रका० वा० 1:1–8; यूहन्ना 14: 1–3; व्य० वि० 29: 29; यूहन्ना 14: 29; रोम० 1: 7; फिलि० 3: 20; दानि० 7: 13,14 ।

याद वचन: "धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और इसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं; क्योंकि समय निकट है" (प्रका०वा० 1: 3) ।

प्रकाशितवाक्य की भविष्यद्वाणियाँ प्रेरित पौलुस को 19 शताब्दी पूर्व दर्शन में दिखाये गये थे जब वह एजियन समुद्र में पतमुस नामक छोटे से पत्थरीले टापू में निवार्सित था (प्रका०वा० 1: 9)। प्रकाशित वाक्य 1: 3 उन पर आशिष की प्रतिज्ञा करता है जो इस किताब को पढ़ते सुनते और इसकी शिक्षाओं को मानते हैं (तुलना करें लूका 6: 47,48)। यह आयत सभा को इंगित करती है जो संवाद को सुनने के लिये कलीसिया में एकत्रित थे। फिर भी वे आशीषित होते हैं इसलिये नहीं कि वे पढ़ते या सुनते हैं वरन इसलिये भी कि वे इस किताब के वचनों को मानते हैं। (देखें प्रका०वा० 22: 7)।

प्रकाशित वाक्य की भविष्यद्वाणियाँ अपने लोगों के लिये परमेश्वर की परवाह को दर्शाती है। वे इस जीवन की लघुता और क्षण भंगुरता को यीशु में उद्धार और हमारे स्वर्गीय महायाजक और राजा के तौर पर उसके काम को, और सुसमाचार प्रचार हेतु हमारी बुलाहट को संकेत करती है।

बाईबल की भविष्यद्वाणियाँ अंधेरे में ज्योति की तरह है (2पत० 1: 19)। वे आज हमारे जीवन के लिये मार्ग और हमारे भविष्य के लिये उम्मीद मुहैया कराने का इरादा रखती हैं। हमें मसीह के आने तक और परमेश्वर के अनंत राज्य की स्थापना तक इस भविष्य-सूचक मार्गदर्शक की जरूरत होगी।

रविवार **दिसम्बर 30**

किताब का शीर्षक

पढ़ें प्रका०वा० 1: 1–2 किताब के पूर्ण शीर्षक का क्या महत्त्व है? इस संदर्भ में कि किताब वाकई में किसके विषय में है शीर्षक हमें क्या सिखलाता है?

---

* सब्त, जनवरी 5 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

प्रकाशितवाक्य 1: 1 "यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य" के तौर पर किताब के शीर्षक का वर्णन करता है। शब्द "Revelation" (प्रकाशित वाक्य) यूनानी शब्द "apocalypse" (अपोकेलिप्से) से आता है जिसका अर्थ है उजागर करना। अपोकेलिप्स यीशु मसीह को उजागर करा है; यह दोनों यीशु से और उसके विषय में हैं। जबकि यह यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर से आया (देखें प्रका०वा० 22: 16), किताब यह साबित करती है कि इसके विषय वस्तु का केन्द्र-बिन्दु यीशु मसीह है। अपोकेलिप्स अपने लोगों के प्रति उसका स्व०प्रकाशन है और उनके लिये उसकी परवाह की अभिव्यक्ति है।

यीशु प्रकाशितवाक्य का केंद्रबिन्दु है। किताब उससे शुरू होती (प्रका०वा० 1: 5-8) और उस पर अंत होती है (प्रका०वा० 22: 12-16).

"और सत्य क्या है दानिएल एवं प्रकाशितवाक्य को कहने दो परन्तु जो भी विषय का पहलू पेश किया गया है समस्त उम्मीदों के केन्द्र के तौर परयीशु को ऊपर उठाता है, 'दाऊद का मूल और वंशज और चमकता और भोर का तारा।"– Ellen G. White, Testimonies to Ministers and Gospel Workers, P. 118.

प्रकाश का यीशु चारों सुसमाचार का यीशु है। प्रकाशित वाक्य, सुसमाचार में सर्वप्रथम वर्णित अनुसार अपने लोगों के उद्धार और यीशु के काम के विश्लेषण को जारी रखता है।

प्रकाशितवाक्य उसके अस्तित्व और सेवकाई के विभिन्न पहलूओं पर ध्यान केंद्रित करता है। आवश्यक रूप से यीशु के पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के साथ यह वहाँ शुरू होता है जहाँ सुसमाचार का अन्त होता है।

इब्रानियों की पत्री के साथ मिलकर प्रकाशित वाक्य यीशु के स्वर्गीय सेवकाई पर जोर देता है। यह दिखलाता है कि उसके स्वर्गारोहण के बाद यीशु ने स्वर्गीय पवित्र स्थान में अपनी याजकीय सेवकाई की शुरुआत की। प्रकाशित वाक्य और इब्रानियों की किताब के वगैर अपने लोगों की ओर से स्वर्ग में मसीह की महायाजकीय सेवकाई के विषय में हमारा ज्ञान अधूरा होता।

पढ़ें यूहन्ना 14: 1-3, किस प्रकार स्पष्ट प्रतिज्ञा हमें समझने में मदद करता है कि इस समय यीशु स्वर्ग में हमारे लिये क्या कर रहा है? इस अद्‌भुत प्रतिज्ञा से हम कौन-सी उम्मीद ले सकते हैं।

सोमवार **दिसम्बर 31**

किताब का उद्देश्य

प्रकाशितवाक्य 1: 1 हमें यह बतलाता है कि किताब का उद्देश्य स्वयं इसके लिखे जाने के समय से भविष्य की घनाओं को बतलाना है। प्रकाशित वाक्य से जो भी अवगत है यह समझ पायेगा कि घटनाओं की भविष्यवाणी चाहे वे पहले ही पूरी हो चुकी हों या भविष्य में होने वाली है किताब की सूची में अधिकांशत: भरी पड़ी हैं।

बाईबलीय भविष्यवाणियों का भौतिक उद्देश्य हमें आश्वस्त करना है कि भविष्य में जो-भी होगा, परमेश्वर के नियंत्रण में होगा।

परिणामत: प्रकाशित वाक्य की भविष्यवाणियों के दो व्यावहारिक उद्देश्य हमें सिखलाना है कि अभी कैसा जीवन जीयें और भविष्य की तैयारी कैसे करें।

पढ़ें व्य०वि० 29: 29 यह पदस्थल किस प्रकार हमें समझने में मदद करता है कि क्यों कुछ चीजें हम पर प्रगट नहीं हुई हैं? इस पदस्थल के अनुसार उन चीजों का क्या उद्देश्य है जो हम पर प्रगट हुई है? वे हमें क्यों बतलाये गये हैं ? देखें प्रका०वा० 22: 7.

_____

_____

_____

प्रकाशित वाक्य के अंतिम समय की भविष्यवाणियाँ भविष्य के विषय में हमारी उत्सुकता को तृप्त करने के लिये प्रगट नहीं की गई हैं। किताब केवल उन चीजों को प्रगट करती है जो हमें जानने की जरूरत है। ये हम पर इसलिये प्रगट की गई हैं ताकि भविष्य में होने वाली गंभीरता को हम समझ सकें और परमेश्वर पर हमारी निर्भरता को सुनिश्चित कर सकें।

सदियों तक अटकलबाजी और इससे बढ़कर संवेदनशीलता अंतिम समय की घटनाओं से संबंधित शिक्षा के साथ जुड़ी रही है। उन लोगों के द्वारा भाग्य बनाये गये हैं जो तत्कालिक अंत की भविष्यद्ववाणी करने के द्वारा लोगों को भयभीत कर अपनी सेवकाई के लिये पैसे लेते हैं। यद्यपि हर बार अंत नहीं आया और लोग हतोत्साहित और भ्रमित हो गये। परमेश्वर ने जो भी अच्छी चीजें हमें दी हैं, उनके द्वारा भविष्यवाणी का गलत इस्तेमाल और गलत अर्थ निकाला जा सकता है।

पढ़ें यूहन्ना 14: 29, इस पदस्थल में हम भविष्यद्ववाणी के उद्देश्य के लिये कौन-सा निर्णायक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत पा सकते हैं?

_____

_____

मंगलवार **जनवरी 1**

प्रकाशितवाक्य की संकेतिक भाषा

पढ़ें प्रका०वा० 13: 1, दानि० 7: 1-3, एवं यहेज०1: 1-14, कौन-सी चीज है जो इन सभी दर्शनों में सामान्य है?

प्रका०वा० 1: 1 आगे वर्णन करता है: "और उसने अपने स्वर्गदूत को भेजकर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया।" इस किताब में हम बहुत खास वचन को पाते हैं। वचन (शब्द) "बताया" जो यूनानी शब्द सिमेनो (Semaino) का रूपांतरण है जिसका अर्थ "संकेतिक चिह्नों द्वारा दिखाना होता है। यह शब्द पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में प्रयुक्त हुआ है जिसमें दानियेल राजा नबूकदनेजर को बतलाता है कि सोना, चाँदी, पीतल, और लोहे की मूर्ति के द्वारा परमेश्वर राजा को सूचित करता है, कि भविष्य में कौन-सी घटनाएँ होंगी (दानि० 2: 45). उसी शब्द को व्यवहार करते हुए यूहन्ना हमें बतलाता है कि प्रकाशित वाक्य की घटनाएँ और दृश्य उसे दर्शन में संकेतिक रूप से दिखाया गया। पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होकर यूहन्ना ने इन संकेतिक प्रस्तुतियों को जैसा उसने दर्शन में देखा विश्वस्तापूर्वक रिकार्ड किया (प्रका०वा० 1: 2).

इस प्रकार प्रकाशित वाक्य की भविष्यवाणियों को वर्णन करने के लिये अधिकतर भागों में जिस भाषा का व्यवहार किया गया है हू-ब-हू रूपान्तरण नहीं किया जाना चाहिए। नियमानुसार बाईबल पढ़ना सामान्यतय: पदस्थल की एक हू-ब-हू समझ की परिकल्पना करता है। परन्तु जब हम प्रकाशित वाक्य को पढ़ते हैं- जब तक यह हू-ब-हू अर्थ को न संकेत करता हो- हमें इसे संकेतिक रूप से रूपान्तरण करने की जरूरत है। जबकि परिदृश्य और घटनाएँ जो प्रगट की गई हैं वास्तविक हैं, वे सामान्यतय: संकेतिक भाषा में प्रगट की गईं।

प्रकाशित वाक्य की विस्तृत संकेतिक चरित्र को दिमाग में रखना, भविष्यद्ववाणी के संवाद को विकृत करने के खिलाफ हमारी रक्षा करेगा। किताब में प्रयुक्त संकेतों के अर्थ को निर्धारित करने के प्रयास में हमें सतर्कता बरतने की जरूरत है, ऐसा न हो कि मानव कल्पना या हमारी संस्कृति की चलती अवधारणा को पदस्थल पर थोप दें। वरन हमें बाईबल का सहारा लेना चाहिए ताकि प्रकाशित वाक्य के संकेतों को समझ सकें।

वास्तव में, प्रकाशित वाक्य के संकेतों के अर्थ को निर्धारित करने के प्रयास में हमें याद रखने की आवश्यकता है कि उनमें से अधिकांश पुराने नियम से लिये गये हैं। बीते हुए कल की भाषा में भविष्य को चित्रित करने के द्वारा

परमेश्वर हमारे मनों को प्रभावित करना चाहता था कि भविष्य में उसके उद्धार के काम बीते कल के उसके उद्धार के काम के समान होंगे। उसने बीते समय में अपने लोगों के लिये जो किया, वह पुन: भविष्य में उनके लिये करेगा। प्रकाशित वाक्य के संकेतों और तस्वीरों को समझाने के प्रयास में, हमें पुराने नियम पर ध्यान देकर शुरू करना चाहिए।

बुधवार **जनवरी 2**

ईश्वरत्व

पौलुस की पत्री के समान प्रकाशित वाक्य की शुरुआत अभिवादन के साथ होती है। यूहन्ना के समय में जाहिर तौर पर किताब एशिया माईनर की सात कलीसियाओं को पत्री के रूप में भेजी गई (देखें प्रका० वा०1: 11). तथापि प्रकाशित वाक्य केवल उनके लिये लिखी नहीं गई थी, वरन मसीही इतिहास की सभी पीढ़ी के लिये थी।

पढ़ें प्रका०वा० 1: 4-5 और रोमि० 1: 7. दोनों पदस्थलों में कौन-सा एक समान अभिवादन मिलता है, और अभिवादन किस के द्वारा दिया गया है?

दोनों पदस्थल पत्रोचित अभिवादन प्रदान करते हैं: " अनुग्रह और शांति मिले।" यह वाक्यांश यूनानी अभिवादन चेरिस (charis= अनुग्रह) एवं इब्रानी अभिवादन सालोम (Shalom = कुशलक्षेम) को सम्मिलित करता है। जैसा कि हम इन पदस्थलों के द्वारा देख सकते हैं, अनुग्रह और शांति के दाता ईश्वरत्व के तीन प्राणी हैं।

पिता ईश्वर "जो है और जो था और जो आने वाला है" (देखें प्रका० वा० 1: 8, प्रका० 4: 8) के तौर पर पहचाना जाता है। यह ओहदा ईश्वरीय नाम यहोवा प्रदान करता है, "मैं जो हूँ सो हूँ" (निर्ग० 3: 14), जो परमेश्वर के अनंत अस्तित्व को संकेत करता है।

पवित्र आत्मा को "सात आत्माओं" के तौर पर वर्णन किया गया है (तुलना करें प्रका० वा० 4: 5 एवं प्रका० वा० 5: 6)। पवित्रशास्त्र में संख्या सात पूर्णता की संख्या है। "सात आत्माएँ" निर्दिष्ट करती हैं कि पवित्र आत्मा सभी सात कलीसियाओं में सक्रिय हैं। यह तस्वीर सम्पूर्ण इतिहास में परमेश्वर के लोगों के बीच में पवित्र आत्मा और उसके निरंतर काम की सर्वव्यापकता को दर्शाती है और इस प्रकार उनकी बुलाहट को पूरी करने में मदद करती है।

यीशु मसीह तीन नामों से पहचाना जाता है: "विश्वास योग्य साक्षी और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा और पृथ्वी के राजाओं का हाकिम" (प्रका०वा० 1: 5)। ये क्रूस पर उसकी मृत्यु, उसका पुनरुत्थान और स्वर्ग में उसके शासन को संकेत करते हैं। तब यूहन्ना वर्णन करता है जिसे यीशु ने किया

है " और जिसने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है। और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना दिया" (प्रका०वा० 1: 5,6)।

मूल यूनानी में, उसने "हमसे प्रेम किया" मसीह के निरंतर (चल रहे) प्रेम को निर्दिष्ट करता है, जो बीता हुआ कल, वर्तमान, और भविष्य को सम्मिलित करता है। जिसने हमें प्रेम किया अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है। यूनानी भाषा में "छुड़ाया" बीते समय में परिपूर्ण कार्य को संकेत करता है: जब यीशु क्रूस पर मर गया उसने हमारे पापों के लिये पूर्ण प्रायश्चित की व्यवस्था की।

इफि० 2: 6 और फिलि० 3: 20 छुड़ाये हुए लोगों को स्वर्ग के नागरिक के तौर पर वर्णन करता है जो जिलाये गये हैं और यीशु के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठे हैं। इन पदस्थलों के क्या अर्थ हो सकते हैं, और इस समय मसीह में हम किस प्रकार इस गौरवमय हैसियत का मजा "राजाओं और याजकों"(प्रकाशितवाक्य 1: 6), के तौर पर लेते हैं जब हम अभी इस पापमय संसार में रहते हैं ? यह जवाब हमारे जवाब को हमारा यह जीवन किस प्रकार प्रभावित करता है?

बृहस्पतिवार **जनवरी 3**

प्रकाशित वाक्य का मुख्य विचार

प्रकाशितवाक्य की प्रस्तावना का निष्कर्ष सम्पूर्ण किताब के यथार्थ केन्द्र बिन्दु को संकेत करता है: पराक्रम और महिमा में यीशु का लौटना। मसीह के पुन: आने की प्रतिज्ञा किताब के निष्कर्ष में तीन बार दुहराया गया है (प्रका०वा० 22: 7,12,20)।

पढ़ें प्रका०वा० 1: 7,8, इस पदस्थल की शब्द-योजना भिन्न-भिन्न भविष्यवाणी के पदस्थलों से लिये गये हैं: दानि० 7: 13,14; जकार्याह 12: 10; एवं मत्ती 24: 30. दूसरे आगमन की निश्चयता के विषय में ये पदस्थल हमें क्या बतलाते हैं ?

प्रकाशित वाक्य में, मसीह का दूसरा आगमन अंतिम छोर है, जिस ओर इतिहास आगे बढ़ता है। दूसरा आगमन इस संसार के इतिहास और परमेश्वर के अनंत राज्य की शुरुआत के निष्कर्ष को चिन्हित करेगा, और वैसा ही समस्त बुराईयों, पीड़ा, दर्द, और मृत्यु से निजात मिलेगी।

बाकी नये नियम की तरह, प्रकाशित वाक्य 1: 7 महिमा और वैभव में मसीह के व्यक्तिगत दृश्यता, और साक्षात् आने को संकेत करता है। हरेक मनुष्य जो उस समय पृथ्वी पर जीवित रहेगा, और वे भी "जिन्होंने उसे छेदा था उसके आने की साक्षी होंगे। ये वचन एक विशेष पुनरुत्थान को संकेत करते

हैं जिसमें मसीह के आगमन से ठीक पहले कुछ लोग जी उठेंगे। जिनमें उसे क्रूस पर लटकाने वाले भी होंगे। जब यीशु,अपने आगमन के साथ, उनका उद्धार करेगा जिन्होंने उसको देख आशा की, वह उनपर दण्ड की आज्ञा लायेगा जिन्होंने इस संसार में रह कर उसकी दया और प्रेम को अस्वीकार किया है।

यीशु मसीह के आगमन की निश्चयता इस वचन के साथ दृढ़ होती है, "हाँ। आमीन" (प्रका० वा० 1: 7)। शब्द "हाँ" यूनानी शब्द नेई (nai); और आशीन इब्रानी भाषा में सकारात्मक अर्थ को बतलाते हैं। ये दोनों शब्द एक साथ निश्चयता को प्रगट करते हैं। ये किताब को दो समान सकारात्मकता के साथ समाप्त करते हैं (देखें प्रका० 22: 20)।

"जब से उद्धारकर्ता ने अपने आने की प्रतिज्ञा की 1800 वर्ष से भी अधिक समय गुजर चुके हैं सदियों तक उसके वचन अपने विश्वस्तजनों के हृदय में साहस भरे हुए हैं। प्रतिज्ञा अभी तक पूरी नहीं हुई है; जीवनदाता अभी तक सोये हुए संतों को उनकी कब्रों से बुलाया नहीं है; लेकिन कहे गये वचन सत्य हैं। परमेश्वर अपने समय में अपने वचन को पूर्ण करेगा। क्या कोई अब थक जायेगा? क्या हम अपने विश्वास को खो दें, जब हम अनंत संसार के इतने करीब हैं? क्या कोई कहे, वह नगर बहुत दूर रह गया है?– नहीं, नहीं। कुछ क्षण, और हम प्रभु को उसकी सुंदरता में देखेंगे। कुछ क्षण और वह हमारी आँखों से सभी आँसूओं को पोंछ डालेगा। कुछ क्षण, और वह हमें अति आनन्द के साथ अपनी महिमा में हमें निर्दोष पेश करेगा।" — Ellen G. White, The Advent Review and Sabbath Herald, Nov. 13, 1913.

> प्रतिज्ञा तब संपूर्ण मानी जाएगी जब प्रतिज्ञा करने वाले में इसे पूरी करने की योग्यता हो। दूसरे आगमन की प्रतिज्ञा किस प्रकार परमेश्वर द्वारा दी गई है, जिसने सभी प्रतिज्ञाओं को बीते समय में पूरी की है, और जिस प्रकार आपको भी उसकी प्रतिज्ञा अनुसार मसीह के दुबारा आने का आश्वासन मिला है?

शुक्रवार **जनवरी 4**

अतिरिक्त विचार: पढ़ें एलेन जी० ह्वाईट की किताब, "The Study of the Book of Daniel and the Revelation," pp. 112-119, in Testimonies to Ministers and Gospel Workers.

"यह प्रकाशित वाक्य कलीसिया के मार्गदर्शन और सांत्वना के लिये दिया गया था---प्रकाशितवाक्य वह है जो प्रगट हुआ है। स्वयं प्रभु यीशु ने अपने दासों को इस किताब में निहित रहस्यों को प्रगट किया और उसने इस प्रकार व्यवस्थित किया है कि इसका अध्ययन सब करें। इसकी सच्चाई उन्हें

बतलायी गई है जो इस जगत् के इतिहास के अंतिम दिनों में वास कर रहे हैं, वैसा ही जैसा यूहन्ना के दिनों में लोग थे। कुछ दृश्य जो इस भविष्यवाणी में वर्णन किये गये हैं बीते कल के हैं, कुछ अभी घटित हो रहे हैं; कुछ हैं जो अंधकार की शक्ति और स्वर्ग के राजकुमार के बीच महान संघर्ष के अन्त को दिखलाते हैं, और कुछ नई पृथ्वी में छुड़ाये गये लोगों की जीत और आनन्द को प्रगट करते हैं।

"कोई न सोचे, क्योंकि वे प्रकाशितवाक्य के प्रत्येक चिह्न के अर्थ का वर्णन नहीं कर सकते हैं, कि इस किताब में निहित सच्चाई के अर्थ को समझने का प्रयास करना उनके लिये व्यर्थ है। जिसने यूहन्ना को ये रहस्य की बातें बतलाई, ध्यानपूर्वक खोज करने वालों को स्वर्गीय वस्तुओं का स्वाद लेने का अवसर देगा। वे लोग जिनके हृदय सच्चाई को ग्रहण करने के लिये खुले हैं इसकी शिक्षाओं को समझ सकेंगे, और प्रतिज्ञा की गई आशीष उन्हें प्राप्त होगी जो इस भविष्यवाणी के वचन को सुनते, और उसके अनुसार चलते हैं जो इसमें लिखे गये हैं।" – Ellen G. White, The Acts of the Apostles, pp. 583-585.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्नः

1. यदि प्रकाशितवाक्य यीशु मसीह का अनावरण है, क्यों शब्द अपोकेलिप्स का आज नकारात्मक अर्थ है? यह नकारात्मकता मसीहियों के बीच प्रकाशित वाक्य के लोकप्रिय समझ के विषय हमें क्या बतलाती है? प्रकाशितवाक्य की भविष्यवाणियों में अकसर डर शब्द क्यों मिला हुआ है ?
2. यीशु के दूसरे आगमन से संबंधित विगत 20 वर्षों में कुछ लोगों द्वारा किये गये असफल भविष्यवाणियों के बारे में चिंतन करें। इन असफल भविष्यवाणियों के क्या नकारात्मक परिणाम हैं? इन भविष्यवाणियों में विवास करने वालों पर क्या प्रभाव होता है? ये असफल भविष्यवाणियाँ किस प्रकार सामान्य तौर पर मसीहियों में जो प्रगट होते हैं बाहरी लोगों को प्रभावित करते हैं जो इसे देखते हैं? भविष्यवाणी में विश्वास करने वाले लोगों के तौर पर और वे जो अंतिम समय की घटनाओं की बाट जोहते हैं हम किस प्रकार एक सही संतुलन बनाते हैं कि हम भविष्यवाणी को किस प्रकार समझते और दूसरों को किस प्रकार सिखाते हैं ?